B.A. III (Hons)
All Papers

वैष्णव सम्प्रदाय

रामानुजाचार्य ने निर्गुण ब्रह्मवाद और सगुण ईश्वरवाद में सरल सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न नया नहीं है। यह भगवद्गीता में, महाभारत के शान्तिपर्वान्तर्गत नारायणीय में एवं पुराणों में, विशेषतः विष्णुपुराण एवं भागवतपुराण में उपलब्ध है। यह परम्परा आलवार सन्तों और आचार्यों द्वारा गतिशील बनी रही। इष्ट देवता के भेद से उस परम्परा ने वैष्णव, शैव और शाक्त सम्प्रदायों का रूप लिया जिनमें क्रमशः विष्णु, शिव और शक्ति उपास्य देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वैष्णव शैव और शाक्त सम्प्रदायों के अपने-अपने आगम ग्रन्थ हैं जो वेद के समकक्ष पूज्य माने जाते हैं। आगमों के चार भाग होते हैं — ज्ञान, योग, क्रिया अर्थात् मन्दिर निर्माण तथा देवप्रतिमा के निर्माण एवं प्रतिष्ठा से सम्बन्ध प्रक्रिया और चर्या अर्थात् उपासना और पूजा के नियम। वैष्णव आगमों को पाञ्चरात्र, भागवत या सात्वत संहिता भी कहते हैं। शाक्त आगमों का प्रचलित नाम तन्त्र है। शाक्तों का शैवों के साथ मिलाप है किन्तु वैष्णवों और शैवों में परम्परागत विरोध रहा है। दक्षिण भारत में वैष्णव शैव और जैन सम्प्रदायों में परस्पर विरोध तथा विद्वेषात्मक संघर्ष होता रहा है। जो भी सम्प्रदाय किसी प्रान्त में राजा को दीक्षित कर लेता था वह उस राज्य में अन्य दो सम्प्रदायों पर अत्याचार करने लगता था। रामानुज के मामा महापूर्ण की आँखे चोल नरेश शैव राजेन्द्र ने निकलवा दी थी और रामानुज को होयसल प्रान्त में शरण लेनी पड़ी थी जहाँ राजा बिट्टिदेव को वैष्णव धर्म में दीक्षित किया जो विष्णुवर्धनदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने मेलुकोट में एक मन्दिर बनवाया जहाँ रामानुज बारह वर्षों तक रहे। पाञ्चरात्र आगम सभी वैष्णव सम्प्रदायों को मान्य है, किन्तु रामानुजाचार्य का श्री वैष्णव सम्प्रदाय उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण और पवित्र मानता है। ऋग्वेद का पुरुषसूक्त वैष्णव दर्शन का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में नारायण द्वारा

Scanned with CamScanner

पाञ्चरात्र मत करने का उल्लेख है। महाभारत में नर और नारायण द्वारा ब्रह्म की उपासना का वर्णन है। अव्यक्त, कृष्ण, नारायण, गोपालतापिनी आदि वैष्णव उपनिषद् हैं। विष्णु, भागवत, गरुड़ और वराह पुराण पाञ्चरात्र या वैष्णव पुराण हैं। तथा वायु, कूर्म, आदित्य, अग्नि एवं लिङ्गपुराण शैव हैं। शंकराचार्य के अनुसार बादरायण ने ब्रह्मसूत्र के तर्कपाद में पाञ्चरात्रों के व्यूह सिद्धान्त का खण्डन किया है। पाञ्चरात्र साहित्य में सात्वत संहिता, जयाख्या संहिता एवं अहिर्बुध्न्य संहिता दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पाञ्चरात्र नामकरण का कारण है कि इस आगम में पञ्चविषयों का निरूपण है जो परमतत्व, मुक्ति, भुक्ति, योग तथा विषय (संसार) है, अथवा पाँच ऋषियों को पाँच रातों में दिया था, अथवा चारों वेदों का और सांख्ययोग का ज्ञान समाहित है। इसका उपदेश नारायण ने

प्रारम्भ से ही विष्णु को दैव अथवा भाग्य का महान विधाता माना गया है। वेदों में उसे तीन पाद वाला देवता कहा गया है। वह अचिन्त्य है और उसका निवास प्रकाश के उज्ज्वल स्वामित्व में है, जहाँ से आकाश में उड़ने वाले पक्षी भी उड़ने का साहस नहीं कर सकते। उपनिषदों में विष्णु के उत्तम स्थान तक पहुँचना मनुष्य का उद्देश्य बताया गया है। वेदों में भी विष्णु के लिए मनुष्य को विपत्ति से छुड़ाने का काम बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा है कि "मनुष्य विष्णुरूप है।" ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार असुरों के विरुद्ध वही देवताओं का बड़ा सहायक है। असुरों से देवताओं के लिए भूमि प्राप्त करने के लिए वह वामन अवतार का रूप धारण कर लेता है। नारायण नाम सबसे पहले हमें शतपथ ब्राह्मण में ही मिलता है।